سُوْرَةُ الْعٰدِيٰتِ مَكِّيَّةٌ

सूरह आ़दियात मक्का में उतारी गई (नाजिल हुई)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

आरंभ (शुरू) अल्लाह के नाम से जो अत्यंत दयावान, निरंतर (असीम) दयाशील है।

وَالْعٰدِيٰتِ ضَبْحًا ۙ (1)

कसम है उन (घोड़ों) की जो हांफते (फुंफकारते) हुए सरपट दौड़ते हैं।

فَالْمُوْرِيٰتِ قَدْحًا ۙ (2)

फिर जो (अपनी टापों से) ठोकर मारकर (प्रहार कर) चिंगारियां निकालते हैं।

فَالْمُغِيْرٰتِ صُبْحًا ۙ (3) فَاَثَرْنَ بِهٖ نَقْعًا ۙ (4)

फिर जो भोर (सुबह - सवेरे) धावा बोलते हैं।[3] फिर जो उसमें गर्द – गुबार (धूल) उड़ाते हैं।[4]

فَوَسَطْنَ بِهٖ جَمْعًا ۙ (5)

फिर जो उसी (अवस्था) में दल (शत्रु - समूह) के बीचो - बीच जा घुसते हैं।

اِنَّ الْاِنْسَانَ لِرَبِّهٖ لَكَنُوْدٌ ۚ (6)

निःसंदेह इंसान अपने रब (पालनहार) के प्रति (बड़ा) कृतघ्न (ना-शुक्रा) है।

وَاِنَّهٗ عَلٰى ذٰلِكَ لَشَهِيْدٌ ۚ (7)

और निःसंदेह वह इस पर (स्वयं) साक्षी (गवाह) है।

وَاِنَّهٗ لِحُبِّ الۡخَيۡرِ لَشَدِيۡدٌ ؕ 8

और निःसंदेह वह धन के मोह में (बहुत) दृढ़ (कठोर) है।

اَفَلَا يَعۡلَمُ اِذَا بُعۡثِرَ مَا فِى الۡقُبُوۡرِ ۙ 9

तो क्या (वह) नहीं जानता ? जब उधेड़ (निकाल) दिया जाएगा, जो क़ब्रों में है।

وَحُصِّلَ مَا فِى الصُّدُوۡرِ ۙ 10

और उजागर कर दिया जाएगा (वो भेद) जो सीनों (हृदयों / दिलों) में हैं।

اِنَّ رَبَّهُمۡ بِهِمۡ يَوۡمَٮِٕذٍ لَّخَبِيۡرٌ ع 11

निःसंदेह उनका रब उस दिन उनसे 'बाख़बर' (पूर्ण परिचित) होगा।